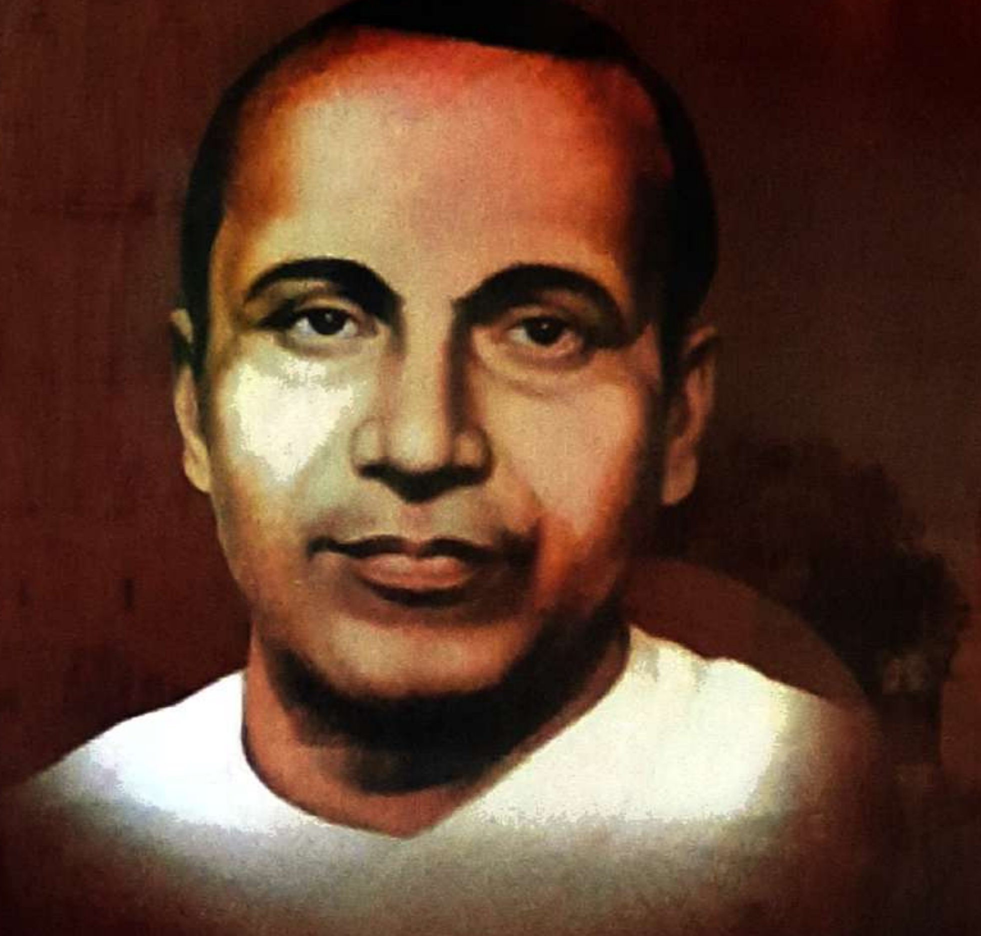

महाकवि जयशंकर प्रसाद

साहित्य संस्कृति महोत्सव

राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं नाट्योत्सव-2024

प्रधान संपादक :- डॉ. कविता प्रसाद | संपादक :- डॉ. विजय पाटील

महाकवि जयशंकर प्रसाद ट्रस्ट
535/27 सेक्टर बी, अलीगंज, लखनऊ -226024
Mob.: 7355707094, 9560202669

MahaKavi Jaishankar Prasad Sahitya Sanskriti Mahotsav

ISBN: 978-93-48519-79-5

Chief Editor- Dr. Kavita Prasad

Editor- Dr. Vijay Patil

Publishers: Neelam Publication

Printer: Neelam Publication

Office : Neelam Publication

M.D. Road, Opp. Railway Power House,

Near Kandivali Station, Kandivali East, Mumbai-400101

Phone : +91 9892153444

Email : helloneelampublication@gmail.com

Rs: 500/-

Copyright ©: Dr. Kavita Prasad

Dr. Vijay Patil

Edition: First- 2025 (Hindi)

© नीलम पब्लिकेशन, मुंबई

महाकवि जयशंकर प्रसाद साहित्य संस्कृति महोत्सव

प्रधान संपादक - डॉ. कविता प्रसाद
संपादक- डॉ. विजय पाटिल

First Published by Neelam Publication 2025

ISBN NO.: 978-93-48519-79-5

This book has been published with all efforts taken to make the material error-free after the consent of the author. However, the author and the publisher do not assume and hereby disclaim any liability to any party for any loss, damage, or disruption caused by errors or omissions, whether such errors or omissions result from
negligence, accident, or any other cause.

While every effort has been made to avoid any mistake or omission, this publication is being sold on the condition and understanding that neither the author nor the publishers or printers would be liable in any manner to any person by reason of any mistake or omission in this publication or for any action taken or omitted to be taken or advice rendered or accepted on the basis of this work. For any defect in printing or binding the publishers will be liable only to replace the defective copy by another copy of this work then available.

12	कामायनी महाकाव्य में वर्णित दाम्पत्य भाव का मनोवैज्ञानिक समीक्षात्मक विश्लेषण डॉ. अन्नपूर्णा श्रीवास्तव	52
13	जयशंकर प्रसाद की सौन्दर्य दृष्टि डॉ. उषा श्रीवास्तव	63
14	महाकवि जयशंकर प्रसाद और उनकी साहित्य साधना डॉ. कविता प्रसाद	67
15	प्रेमचंद के उपन्यासों में दलित चेतना डॉ. अनुराधा सिंह	70
16	राष्ट्रवाद और स्वतंत्रता संग्राम प्रसाद और प्रेमचन्द के साहित्य में डॉ. मंजू पटेल	73
17	उपन्यास सम्राट प्रेमचंद और महाकवि जयशंकर प्रसाद पर महर्षि दयानंद सरस्वती एवं आर्य समाज का प्रभाव डॉ. विनोदकुमार विलासराव वायचळ 'वेदार्य'	75
18	जयशंकर प्रसाद और प्रेमचंद साहित्य के दो मित्रवत स्तंभ सुश्री माधुरी करसालं मधुरिमा	87
19	नारी दृष्टि : प्रसाद और प्रेमचंद के पात्र में गौरव कुमार	91
20	चन्द्रगुप्त का सांस्कृतिक महत्व कुसुम शर्मा	94
21	जयशंकर प्रसाद के नाटकों में राष्ट्रीय चेतना की भावना तथा सांस्कृतिक प्रेम प्रीति सिंह	98

उपन्यास सम्राट प्रेमचंद और महाकवि जयशंकर प्रसाद पर महर्षि दयानंद सरस्वती एवं आर्य समाज का प्रभाव

✍ डॉ. विनोदकुमार विलासराव वायचळ 'वेदार्य'
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
व्यंकटेश महाजन वरिष्ठ महाविद्यालय,धाराशिव

कुंजी शब्द :-

हिंदी साहित्य, हिंदी गद्य, आर्य समाज, महर्षि दयानंद सरस्वती, उपन्यास सम्राट प्रेमचंद, महाकवि जयशंकर प्रसाद, गुरुकुल कांगड़ी, स्वामी श्रद्धानंद, दयानंद एंग्लो वैदिक कॉलेज, आपकी तस्वीर, वरदान, मंदिर, प्रतिज्ञा, सफ़ेद खून, कायाकल्प, कर्मभूमि, राजेन्द्र जिज्ञासु, भवानीलाल भारतीय, विवेक आर्य, प्रदीप जैन, कंकाल, तितली, इरावती, ध्रुवस्वामिनी ।

इस शोधालेख में हम सर्वप्रथम उपन्यास सम्राट प्रेमचंद जी, जो स्वयं विधिवत आर्य समाज के सदस्य रहे उनके बारे में अपने विचार प्रस्तुत करने का प्रयास करेंगे। उनके उपरांत महाकवि जयशंकर प्रसाद जी के साहित्य पर लक्षित होनेवाले महर्षि दयानंद सरस्वती जी और आर्य समाज की विचारधारा के प्रभाव को रेखांकित करने का प्रयास करेंगे। आशा है विद्वतजनों को हमारा यह प्रयास उचित लगे और वे हमारा उत्साह बढ़ने का अनुग्रह करेंगे......

आर्य समाज की सदस्यता :- प्रेमचंद विधिपूर्वक रीति से आर्यसमाज के सदस्य बने। वे स्वयं आर्यसमाज के सदस्य थे और दलित उद्धारक एवं हिंदी भाषा के समर्थक थे। प्रेमचंद जी के आर्यसमाज के अनेक विद्वानों से सम्बन्ध थे जैसे पंडित गंगा प्रसाद उपाध्याय जी उनके सहपाठी थे, मौलवी महेश प्रसाद आलिम फ़ाज़िल जी उनके मित्र थे, कहानीकार सुदर्शन जी भी उनके अभिन्न मित्र थे, इन्द्र विद्यावाचस्पति जी (स्वामी श्रद्धानंद जी के पुत्र) के साथ सम्बन्ध थे, आचार्य रामदेव जी के अपार स्वाध्याय के आप प्रशंसक थे। पंडित पद्मसिंह शर्मा और चंद्रमणि विद्यालंकार से आपके घनिष्ठ सम्बन्ध थे। मुंशी प्रेमचन्द जी ने अपने जीवन की अन्तिम वेला तक आर्य समाजी पत्रों में लिखते रहे। उनके लेखों में ईश्वर के सर्वव्यापक स्वरूप पर प्रकाश पड़ता है। उन्होंने इस आर्य सिद्धान्त पर डटकर लिखा है। सबको अपनाना, किसी को अस्पृश्य न मानना, आर्य धर्म के बन्द द्वार सबके लिए खोलना, दीनों की रक्षा, धेनु (गौमाता) की रक्षा, प्राणिमात्र से प्यार, प्रेमचन्द जी ने इन सब विषयों पर लिखा है और आर्य समाज का गुणगान किया है।

आर्य समाज के सदस्य होने के साथ-साथ आर्य समाज के प्रचार-प्रसार के लिए जनता से दान इकट्ठा करना, सदस्यता शुल्क इकट्ठा करना जैसे कार्य आपने अनेक बार किये हैं। कभी-कभी आर्थिक व्यवहार में विलम्ब हो जाना उन्हें पसंद नहीं था। ७ फरवरी, १९१३ में मुंशी दया नारायण निगम को लिखा, " मेरे जिम्मे हमीरपुर आर्यसमाज के दस रुपये बाकी हैं। बार-बार तकाज़ा हुआ है, मगर तंगदस्ती ने इजाज़त न दी कि अदा कर दूँ। आप अगर एफोर्ड कर सकें तो बरारास्त मेरे नाम से हमीरपुर आर्यसमाज के सेक्रेटरी के नाम दस रुपये का मनी आर्डर कर दें। ममनून हूँगा। तकलीफ तो होगी मगर मेरे खातिर इतना सहना पड़ेगा क्यूँकि यहाँ अब जलसा भी अनकरीब होनेवाला है। मुकर्रर अर्ज यह है कि यह दस रुपये जरूर भेज देवें। मैंने जनवरी में अदा करने का हतमी वादा किया है।" एक महीने के बाद फिर याद कराया, "अगर आपने हमीरपुर समाज के नाम दस रुपये रवाना किए हों तो बराहे करम अब कर दीजिए, क्यूँकि मैं १४ मार्च को वहाँ

जाऊँगा और तकाजा नहीं सहना चाहता।" ०१

उपर्युक्त पत्रांश से स्पष्ट है कि प्रेमचंद आर्य समाज का सदस्यता शुल्क भुगतान करने के लिए चिंतित हैं। इन शब्दों से यह समझने में कोई बाधा नहीं है कि सन १९१३ तक प्रेमचंद विधिवत स्वरूप से आर्य समाज के सदस्य बन चुके थे और उनका आर्य समाज से एक बार सम्बन्ध बना तो फिर जीवन-भर बना रहा।

आर्य भाषा सम्मेलन के अध्यक्ष :-

अपनी मृत्यु से कुछ महीने पहले मुंशी प्रेमचंद अप्रैल १९३६ में लाहौर आर्य समाज की जुबली के अवसर पर आर्य भाषा सम्मेलन के अध्यक्ष के नाते प्रसंगवशात् आर्यसमाज की सराहना करते हुये कहते हैं- " आर्यसमाज ने इस सम्मेलन का नाम आर्यभाषा सम्मेलन शायद इसलिए रखा है कि यह समाज के अंतर्गत उन भाषाओं सम्मेलन का है जिनमें आर्यसमाज ने धर्म का प्रचार किया है और उनमें उर्दू और हिंदी दोनों का दर्जा बराबर है। मैं तो आर्य समाज को जितनी धार्मिक संस्था मानता हूँ उतनी ही तहज़ीबी (सांस्कृतिक) संस्था भी समझता हूँ। बल्कि आप क्षमा करें तो मैं कहूँगा कि उसके तहज़ीबी कारनामे उसके धार्मिक कारनामों से भी प्रसिद्ध और रोशन हैं। आर्यसमाज ने साबित कर दिया है कि समाज की सेवा ही किसी धर्म के सजीव होने के लक्षण है। कौमी जिंदगी की समस्याओं को हल करने में उसने जिस दूरदेशी का सबूत दिया है उस पर गर्व कर सकते है। हरिजनों के उद्धार में सबसे पहले आर्य समाज ने कदम उठाया। लड़कियों की शिक्षा की ज़रूरत को सबसे पहले उसने समझा। वर्ण-व्यवस्था को जन्मगत न मानकर कर्मगत सिद्ध करने का सेहरा उसके सर पर है। जातिगत भेद-भाव और खान-पान में छूत-छात और चौके-चूल्हे की बाधाओं को मिटाने का गौरव उसी को प्राप्त है। यह ठीक है कि ब्रह्मसमाज ने इस दिशा में पहले कदम रखा पर वह थोड़े से अंग्रेजी पढ़े-लिखों तक ही रह गया। इस विचारों को जनता तक पहुँचाने का बीड़ा आर्यसमाज ने ही उठाया। अन्धविश्वास और धर्म के नाम पर किए जानेवाले हज़ारों अनाचारों की कब्र उसने खोदी, हालाँकि मुर्दे को उसमें दफन न कर सका। और अभी तक उसका जहरीला दुर्गन्ध उड़कर उड़कर समाज को दूषित कर रहा है।

समाज के मानसिक और बौद्धिक धरातल (सतह) को आर्यसमाज ने जितना उठाया है, शायद ही भारत की किसी संस्था ने उठाया हो। उसके उपदेशकों ने वेदों और वेदांगों के गहन विषय को जन-साधारण की संपत्ति बना दिया, जिनपर विद्वानों और आचार्यो के कई-कई लिवर वाले ताले लगे हुये थे। आज आर्यसमाज के उत्सवों और गुरुकुलों के जलसों से हज़ारों मामूली लियाकत के स्त्री-पुरुष सिर्फ विद्वानों के भाषण सुनने का आनंद उठाने के लिए खींचे चले जाते हैं। गुरुकुलाश्रम को नया नाम देकर आर्यसमाज ने शिक्षा को सम्पूर्ण बनाने का महान उद्योग किया है। सम्पूर्ण से मेरा आशय उस शिक्षा का जो सर्वांगपूर्ण हो, जिसमें मन, बुद्धि, चरित्र और देह, सभी के विकास का अवसर मिले। शिक्षा का वर्तमान आदर्श यही है। मेरे ख्याल में वह चिरसत्य है। वह शिक्षा जो सिर्फ अक्ल तक ही रह जाये, अधूरी है। जिन संस्थाओं में युवकों में समाज से पृथक रहनेवाली मनोवृति पैदा करें, जहाँ पुरुषार्थ इतना कोमल बना दिया जाए कि उसमें मुश्किलों का सामना करने की शक्ति न रह जाए, जहाँ कला और संयम में कोई में न हो, जहाँ की कला केवल नाचने, गाने और नकल करने में ही जाहिर हो, उस शिक्षा का मैं कायल नहीं हूँ। शायद ही मुल्क में कोई ऐसी शिक्षण संस्था हो जिसने कौम की पुकार का इतना जवांमर्दी से स्वागत किया हो। अगर विद्या हममें सेवा और त्याग का भाव न लाए, अगर विद्या हमें आदर्श के लिए सीना खोलकर खड़ा होना न सिखाए, अगर विद्या हममें स्वाभिमान पैदा करे, और हमें समाज के जीवन प्रवाह से अलग रखे तो उस विद्या से हमारी अविद्या अच्छी। और आर्यसमाज ने हमारी भाषा के साथ जो उपकार किया है कि स्वामी दयानन्द ने इसी भाषा में सत्यार्थ प्रकाश लिखा और उस वक्त लिखा जब उसकी इतनी चर्चा न थी। उनकी बारीक़ नज़र ने देख लिया कि अगर जनता में प्रकाश ले जाना है तो उसके लिए हिंदी भाषा ही

अकेला साधन है. और गुरुकुलों ने हिंदी भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाकर अपने भाषा प्रेम को और भी सिद्ध किया है।" ०२

मूर्तिपूजा के विरोधी पर दयानंद के भक्त :-

मुंशी प्रेमचन्द जी ने उर्दू में 'आपका चित्र' ('आपकी तस्वीर' का हिंदी अनुवाद, अनुवादक प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु) नामक एक कहानी तीन अध्यायों में लिखी थी जो लाहौर के उर्दू पत्र 'प्रकाश' में सन् १९२९ में प्रकाशित हुई थी। इस कहानी के पहले भाग में उन्होंने आर्यसमाज के लोगों द्वारा महर्षि दयानन्द का अपने घरों में चित्र लगाये जाने को मूर्तिपूजा से भिन्न होने या न होने पर बहुत ही मार्मिक शब्दों में प्रकाश डाला है। मूर्तिपूजा व चित्रपूजा का ऐसा सशक्त भावपूर्ण चित्रण इससे पूर्व कहीं पढ़ने को नहीं मिलता। यह उनके आर्य समाजी होने का सबसे बड़ा प्रमाण माना जा सकता है। वह लिखते हैं – 'लोग मुझ से कहते हैं तुम भी मूर्ति-पूजक हो। तुम ने भी तो स्वामी दयानन्द का चित्र अपने कमरे में लटका रखा है। माना कि तुम उसे जल नहीं चढ़ाते हो। इसको भोग नहीं लगाते। घण्टा नहीं बजाते। उसे स्नान नहीं कराते। उसका शृंगार नहीं करते। उसका स्वांग नहीं बनाते। उसको नमन तो करते ही हो। उसकी ऋषि दयानन्द की विचारधारा को तो सिर झुकाते हो, मानते ही हो। कभी-कभी माला व फलों से भी उसका सम्मान करते हो। यह पूजा नहीं तो और क्या है?' ०३

इन सभी प्रश्नों का उत्तर देते हुए मुंशी प्रेमचन्द जी लिखते हैं – 'उत्तर देता हूँ कि श्रीमान् इस आदर व पूजा में अन्तर है। बहुत बड़ा अन्तर है। मैं उसे अपने कक्ष में इसलिए नहीं लटकाये हुए हूँ कि उसके दर्शन से मुझे मोक्ष की प्राप्ति होगी। मैं आवागमन के चक्कर से छूट जाऊँगा। उसके दर्शन मात्र से मेरे सारे पाप धुल जायेंगे अथवा मैं उसे प्रसन्न करके अपना अभियोग जीत जाऊँगा अथवा शत्रु पर विजय प्राप्त कर लूँगा किंवा और किसी ढंग से मेरा धार्मिक अथवा सांसारिक प्रयोजन सिद्ध हो सकेगा। मैं उसे केवल इस कारण से अपने कमरे में लटकाये हुए हूँ कि स्वामी जी के जीवन का उच्च व पवित्र आचरण सदा मेरे नयनों के सम्मुख रहे। जिस घड़ी सांसारिक लोगों के व्यवहार से मेरा मन ऊब जाये, जिस समय प्रलोभनों के कारण पग डगमगायें अथवा प्रतिशोध की भावना मेरे मन में लहरें लेने लगे अथवा जीवन की कठिन राहें मेरे साहस व शौर्य की अग्नि को मन्द करने लगें, उस विकट वेला में उस पवित्र मोहिनी मूर्त के दर्शनों से आकुल व्याकुल हृदय को शान्ति हो। दृढ़ता धीरज बने रहें। क्षमा व सहनशीलता के मार्ग पर पग चलते चलें तथा मैं अनुभव के आधार पर कह सकता हूँ कि इस चित्र से मुझे लाभ पहुँचा है और एक बार नहीं कई बार।' ०४

कहानी के दूसरे भाग में एक राजा का वर्णन किया गया है जो अपने एक विश्वसनीय सेवक को अपनी पसन्दीदा महिला के प्रेमी की हत्या का कार्य सौंपता है और उस कार्य को करने के बदले में अकूत सम्पत्ति देने का वायदा करता है। युवक प्रलोभनवश तैयार हो जाता है परन्तु घर जाकर दीवार पर स्वामी दयानन्द का चित्र देखकर अपने निर्णय को महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों के विपरीत जानकर पश्चाताप करता है और, परिणाम की चिन्ता न कर, साहस करके राजा साहब के पास जाकर अपनी असमर्थता व्यक्त करता है। इस पर उसे अनेक कटु बातें सुनने को मिलती है। राजा साहेब होठों को दाँतों से काटकर बोले, " बहुत अच्छा जाओ और आज ही रात को मेरे राज्य की सीमा से बाहर निकल जाओ। सम्भव है कल तुम्हें यह अवसर न मिले।'' ०५

उसी लहर में उन्होंने उस पूर्व विश्वसनीय युवक को नमकहराम, टेढ़ी बुद्धि वाला, अधम और जाने क्या-क्या कहा। प्रणाम कर वह युवक चला जाता है। उसी रात्रि को अकेले ही कुछ वस्त्र और कुछ रुपये एक सन्दूक में रखकर घर से निकल पड़ा। हाँ ! स्वामी जी का चित्र उसके सीने से लगा हुआ था। इस कहानी में मुंशी प्रेमचन्द जी ने स्वामी दयानन्द व उनके चित्र के प्रति अपने मनोभावों को प्रस्तुत किया है।

ध्यातव्य है कि प्रेमचंद की इस उर्दू कहानी को 'प्रकाश' की फाइलों में से खोजकर उसकी मूल प्रति स्वर्गीय रामलाल नाभवी ने मुम्बई के प्रेमचंद-विशेषज्ञ गोपाल कृष्ण माणकटाला को उपलब्ध करा दी थी, जो उन्होंने अमृतराय को सन् १९९१ में भेज दी थी। इसकी प्राप्ति सूचना देते हुए अमृतराय ने अपने २९ मई १९९१ के पत्र में माणकटालाजी को लिखा था-

"आपकी इत्तिला के लिए अर्ज है कि आपके १३ मई के खत के साथ मुझे प्रेमचंद की वह नायाब कहानी - 'आपकी तस्वीर' और रस्तोगी साहब के मजमून का जीरोक्स मोसूल हुए, मैं प्रेमचंद की इस नायाब कहानी को जरूर पहले किसी परचे में, रिसाले में शाया कराऊँगा। मजमूए की बात तो तब तक रुकी रहेगी जब तक मुंशीजी की ऐसी नयी नायाब कहानियाँ और भी न मिल जायें। जो हो, यह कहानी जब भी और जहाँ भी शाया होगी उसके साथ यह इत्तिला भी जरूर जाएगी कि इसकी तलाश का सेहरा जनाब रामलाल नाभवी के सिर पर है।" ०६

गुरुकुल कांगड़ी के वार्षिकोत्सव की अध्यक्षता :-

गुरुकुल कांगड़ी की साहित्य परिषद् के जुलाई १९२७ में हुए वार्षिकोत्सव की अध्यक्षता प्रेमचंद ने की थी और इस उत्सव में वहाँ निरन्तर तीन दिन तक प्रवास करके गुरुकुल कांगड़ी से पर्याप्त परिचय प्राप्त किया था। प्रेमचंद ने वहाँ के तीन दिनों के अनुभव लिपिबद्ध करके 'गुरुकुल कांगड़ी में तीन दिन' ०७ शीर्षक लेख के रूप में लखनऊ की मासिक पत्रिका 'माधुरी' के अप्रैल १९२८ के अंक में प्रकाशित करा दिए थे। प्रेमचंद के इस लेख का उर्दू अनुवाद ०८ उर्दू पत्रकारिता के युगपुरुष महाशय कृष्णजी के सम्पादन में लाहौर से प्रकाशित होने वाले उर्दू साप्ताहिक 'प्रकाश' के २२ अप्रैल १९२८ के अंक में भी प्रकाशित हो चुका है। गुरुकुल कांगड़ी के अनुभवों पर प्रेमचंद ने एक पूरक लेख लिखकर चार वर्ष उपरान्त पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी के सम्पादन में कलकत्ता से प्रकाशित मासिक पत्र 'विशाल भारत' के अगस्त १९३२ के अंक में 'पद्मसिंह शर्मा के साथ तीन दिन'०९ शीर्षक से प्रकाशित कराया था, जो प्रेमचंद के मानस पर आर्य समाज की स्थायी छाप का ज्वलन्त प्रमाण है।

दिल्ली से प्रकाशित होने वाले मासिक पत्र 'शुद्धि समाचार' का जनवरी-फरवरी १९३२ का संयुक्तांक श्रद्धानन्द बलिदान अंक के रूप में प्रकाशित हुआ था, जिसमें प्रेमचंद का लेख 'स्वामी श्रद्धानन्द और भारतीय शिक्षा प्रणाली' १० शीर्षक से प्रकाशित हुआ। इस लेख में प्रेमचंद ने भारतीय शिक्षा प्रणाली को स्वामी श्रद्धानन्दजी की देन पर विस्तार से प्रकाश डाला है। प्रकारान्तर से इस लेख को भी स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित गुरुकुल कांगड़ी में बिताए गए तीन दिनों से प्रभावित स्वीकार किया जा सकता है। इस लेख से भी प्रेमचंद की आर्य समाजी विचारधारा ही प्रमाणित होती है।

हिंदी भाषा के प्रचारक :-

प्रेमचंद हिंदी के बड़े पक्षधर थे। उर्दू से आरम्भ कर हिंदी में आये। हिंदी के वे बड़े पक्षधर थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी देवनागरी के माध्यम से देश को एक सूत्र में जोड़ने का सन्देश दे गए। प्रेमचंद उसी सन्देश को अपने उपन्यास 'वरदान' में देते है। इस उपन्यास के पात्र मुंशी संजीवनलाल अपनी पुत्री बिरजन से कहते हैं कि "बेटी , तुम तो संस्कृत पढ़ती हो। जिस पुस्तक की तुम बात करती हो वह तो भाषा (हिंदी) में है। " बिरजन उत्तर देती है, "तो मैं भी भाषा ही पढूँगी। इसमें कैसी अच्छी-अच्छी कहानियाँ है। मेरी किताब में तो एक कहानी भी नहीं है।" ११ प्रेमचंद कैसे सरलता से हिंदी का प्रचार कर रहे है।

पाखण्ड-खंडन :-

प्रेमचंद ने धर्म के नाम पर शोषण करने वाले महंतों व पुजारियों की पोल खोली। जैसे एक आर्यसमाजी प्रचारक धर्म के नाम पर चल रही कुरीतियों का भंडाफोड़ करता हैं। मंदिर के महंतों के अनैतिक हरकतों को प्रेमचंद लिखकर उन्हें

अपराधी सिद्ध करने में भी प्रेमचंद पीछे नहीं रहते। मठाधीशों को जुआ खेलने वाला, ईमान बेचने वाला, झूठी गवाहियाँ देने वाला, भीख माँगने वाला और जिनके स्पर्श तक से देवता कलंकित हो ऐसा धर्म के पाखंडी ठेकेदार प्रेमचंद लिखते हैं। प्रेमचंद के हृदय में अछूत कहलाने वाले लोगों से उनका धार्मिक अधिकार छीने जाने पर कितनी पीड़ा होगी जिसका वर्णन प्रेमचंद ने किया हैं। कभी प्रेमचंद अछूतों का मंदिर प्रवेश करवाते है। कभी प्रेमचंद अछूतों और सवर्णों का एक साथ बैठकर सहभोज करने का वर्णन दर्शाते हैं। 'मंदिर' नामक कहानी में प्रेमचंद एक चमारिन विधवा पर मंदिर में प्रवेश न करने देने वाले पुजारी को निर्दयी धर्म के ठेकेदार लिखते है। १२ ठाकुर का कुआँ, दूध का दाम, सदगति, जीवन में घृणा का स्थान-साहित्य में घृणा का स्थान, कफ़न प्रेमचंद की कुछ कृतियाँ हैं। जिनमें उन्होंने समाज के सबसे अधिक दबे, कुचले हुए पात्रों पर हो रहे अत्याचारों का मार्मिक चित्रण किया हैं। उनके उद्धार की कामना का सन्देश दिया है। उस काल में यह सन्देश एक आर्यसमाजी हृदय के व्यक्ति की कामना के अतिरिक्त और हो भी क्या सकता था।

विधवा विवाह-अंतर्जातीय विवाह के समर्थक :-

कालांतर में 'प्रतिज्ञा' के नाम से उपन्यास लिखा। इस उपन्यास का पात्र अमृतराय विधवा विवाह वह भी अंतर्जातीय करने का दुस्साहस उस काल में करता हैं। समाज अमृतराय के विरुद्ध है। पर उसके मन में तो जाति उन्नति का सपना है। जिस काल में कोई इस विषय में सोच भी नहीं सकता था। यह चिंतन प्रेमचंद को आर्यसमाज के विधवा विवाह अभियान से मिला। १३

गौ रक्षा और देश रक्षा के समर्थक :-

प्रेमचंद के अगले उपन्यास 'वरदान' में देशोद्धार समाहित है। उपन्यास के चरित्र नायक बालाजी है जो समाज सुधार के लिए समर्पित है। गाँव के बच्चे भूखे मरते है। बालाजी उनके कल्याण के लिए गौशाला खुलवाकर उन्हें दूध पिलाते है। समाज के निर्धन बच्चों पर ऐसा उपकार करने का सन्देश महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने ही तो दिया था। जिसे प्रेमचंद ने अपनी लेखनी से उकेरा। १४

ईसाई मिशनरियों की धर्मान्तर योजना के विरोधी :-

एक जलसे पर आर्यसमाज के प्रचारक मौलवी महेश प्रसाद 'आलिम फ़ाज़िल' अपने साथियों के साथ प्रेमचंद के आवास पर ठहरे। उनकी वार्तालाप के विषय दो थे। पहला आर्यसमाज और उसके कार्य सम्बंधित। दूसरे महोबा में ईसाई मिशनरियों द्वारा हिन्दू लड़के-लड़कियों को ईसाई बनाना।

इसी चिंतन का परिणाम हम प्रेमचंद की अगली कृति 'सफेद खून' में पढ़ते है। इस कृति में एक अकाल ग्रस्त परिवार के बच्चे को ईसाई पादरी क्रिस्चियन बनाकर पढ़ने के लिए पुणे भेज देता हैं। जब वह लौट कर आता है तो उसका परिवार तो उसे अपनाना चाहता है। मगर उसका समाज उसके विधर्मी बनने के कारण उसे स्वीकार नहीं करता। वह युवक यह कहकर कि जिनका खून सफ़ेद है। मैं उनके बीच में नहीं रह सकता चला जाता है। १५ प्रेमचंद अपनी इस कृति में ईसाई धर्मान्तरण और उसके सामाजिक प्रभाव पर एक आर्यसमाजी के समान चिंतन प्रस्तुत करते है।

हिन्दू-मुस्लिम एकता के समर्थक :-

आर्य समाज ने अन्याय कारणों तथा प्रलोभनों से हिन्दू धर्म छोड़कर अन्य धर्म स्वीकार कर लेने वाले बन्धुओं की शुद्धि करके पुनः हिन्दू धर्म की विस्तृत सभा में सम्मिलित करने का अभियान छेड़ा था। शुद्धि आन्दोलन के क्रम में जब मलकाना राजपूत मुसलमानों के जबरन शुद्धिकरण के समाचार के साथ इसके विरोध में मुस्लिम समुदाय के संगठित होने की सूचना प्रेमचंद को प्राप्त हुई तो उससे व्यथित होकर उन्होंने मुंशी दयानारायण निगम के सम्पादन में कानपुर से

प्रकाशित होने वाले उर्दू मासिक 'जमाना के मई १९२३ के अंक में 'मलकाना राजपूत मुसलमानों की शुद्धि' शीर्षक से एक लेख प्रकाशित कराया। प्रेमचंद का यह लेख बाह्य रूप में तो शुद्धि आन्दोलन का विरोध करता प्रतीत होता है और इससे क्षुब्ध होकर शुद्धि आन्दोलन के समर्थकों ने प्रेमचंद पर आक्षेप भी किए परन्तु वास्तविकता कुछ और ही है। प्रेमचंद ने अपने इस महत्त्वपूर्ण लेख में शुद्धि आन्दोलन को मुसलमानों के साथ-साथ ईसाइयों तक विस्तृत करने की भावना प्रकट की थी। इसके अतिरिक्त समाज से घृणित छुआछूत मिटाने और दलितोत्थान का आह्वान करते हुए उन्होंने लिखा- "उनको क्यों नहीं अपनाते, जिनके अपनाने से हिन्दू कौम को असली कुव्वत हासिल होगी। करोड़ों अछूत ईसाइयों के दामन में पनाह लेते चले जाते हैं, उन्हें क्यों नहीं गले से लगाते। अगर आप कौम के सच्चे खैरख्वाह हैं तो इन अछूतों को उठाएँ, इन पामालों के जख्मों पर मरहम रखें, उनमें तालीम और तहजीब की रोशनी पहुँचाएँ , आला और अदना की कैदों को मिटाएँ। छूतछात की बेमानी और मुहमिल कैदों से कौम को पाक कीजिए। क्या हमारी रासिख-उल-एतकाद मजहबी जमातें डोमों और चमारों से बिरादराना मसावात करने के लिए तैयार हैं। अगर नहीं हैं तो उनकी शीराजाबन्दी का दावा बातिल है। आप या तो हुक्काम की रेशादवानियों के शिकार हो गए हैं, या मजहबी तंगनजरी ने आपकी बसारत को गायब कर दिया है। आपको वाजे हो कि मुसलमानों से दुश्मनी करके, अपने पहलू में काँटे बोकर आप अपनी कौम को मजबूत नहीं कर रहे हैं। आप मुसलमानों को जबरन, कहरन हुक्मराँ कौम की मदद लेने के लिए मजबूर कर रहे हैं। आप अपनी तलवार मुकाबिल के हाथ में दे रहे हैं। आपका खुदा ही हाफिज है। ' १६

उपर्युक्त शब्दों से स्पष्ट है कि प्रेमचंद शुद्धि आन्दोलन के विरोधी नहीं हैं वरन् इसके प्रतिकूल वे इस आन्दोलन को एक व्यापक आधार देने का समर्थन करते दिखाई देते हैं। देश के स्वाधीनता संघर्ष में आर्य समाज के व्यापक योगदान की पृष्ठभूमि में भी प्रेमचंद स्वाधीनता प्राप्ति के लिए हिन्दू-मुस्लिम एकता को आवश्यक तत्व मानते हुए आर्य समाज के सिद्धान्तों और कार्यप्रणाली को व्यावहारिक रूप प्रदान करते दिखाई देते हैं।

१९२० के दशक में भारत हिन्दू-मुस्लिम दंगों में जल उठा। प्रेमचंद जानते थे कि इन दंगों के पीछे अंग्रेज है। आपने 'नबी का नीति निर्वाह', 'फातिहा', 'मंदिर और मस्जिद', 'कर्बला' जैसी रचनाएँ लिखीं। 'कायाकल्प' में उन्होंने मुसलमानों को ईद पर गौवध से रोका। 'कायाकल्प' में हिन्दुओं और मुसलमानों के मध्य हुए संवाद का सन्देश सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका में दिए गए सन्देश से मिलता हैं। १७

स्वाधीनता आन्दोलन के समर्थक :-

आर्यसमाज के देश को स्वतंत्र करवाने के चिंतन से भी प्रेमचंद प्रभावित हुए बिना न रहे। सरकारी नौकरी में होते हुए भी प्रेमचंद ने 'सोज-ए-वतन' के नाम से उपन्यास लिखा जो देशप्रेम की पाँच कहानियों का संग्रह था। पुस्तक जब्त हुई। प्रेमचंद को धमकी मिली कि आगे से कुछ भी लिखने से पहले सरकार से इजाज़त लेनी होगी। प्रेमचंद ने नाम बदलकर नवाब राय के नाम से 'वरदान' लिखा। इसके चरित्र सुवामा कि इच्छा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के समान देशसुधार की है। १८ अंग्रेजी की नाक के तले ऐसे पंगे लेने वाला कोई आर्यसमाज ही उस काल में हो सकता था। प्रेमचंद उन्हीं में से एक थे।

जातिवाद / छुआछूत (अस्पृश्यता) के विरोधी :-

प्रेमचंद का सबसे तीव्र प्रहार अपनी लेखनी द्वारा अगर किसी क्षेत्र में सबसे अधिक हुआ। तो वह जातिवाद के विरुद्ध था। जन्मना जातिवाद की कड़ी आलोचना की थी। नीच कहलाने वाली जातियों के सामाजिक उत्थान के लिए उनके हृदय में एक विशेष तड़प थी। जातिवाद और छुआछूत के अंत का आवाहन महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने किया था जिसे आर्यसमाज के शीर्ष नेताओं जैसे स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपत राय, भाई परमानन्द, लाला गंगाराम, संत राम बी.

ए. ने न केवल आगे बढ़ाया बल्कि रोपड़ के पंडित सोमनाथ की माँ, जम्मू के महाशय रामचंद्र, इंदौर के वीर मेघराज जाट ने अपना बलिदान तक दे दिया दिया। प्रेमचंद इसी कड़ी में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के एक प्रबल संदेशवाहक बनकर जातिवाद के विरुद्ध अपने लेखनी थामते दिखे।

वहीं दूसरी ओर आप अपने उपन्यास 'कर्मभूमि' में एक ऊँचे परिवार में जन्मे युवक अमरकांत का वृत्तान्त लिखते हैं। जो नीची जाति की बस्ती में जाकर रहने लगता है। १९ उन्हें स्वच्छता का सन्देश और शिक्षा देता है। उन्हें शराब और मुर्दा-माँस खाने से विमुख करने का प्रयास करता हैं। अंत में उसकी विजय होती है। २० 'कर्मभूमि' पढ़कर ऐसा प्रतीत होता है मानो प्रेमचंद किसी सवर्ण परिवार में जन्में आर्यसमाजी प्रचारक के जीवन वृतांत को अपनी कलम से उद्धृत कर रहे हो।

मंदिरों में चमारों के प्रवेश न कर पाने पर प्रेमचंद एक ऐसा कटाक्ष लिखते है। जो पढ़ने वालों की आत्मा को अंदर तक झकझोर देता है। प्रेमचंद लिखते है कि "चमारों के हाथ के बने जूते पहनकर कोई भी मंदिर जा सकता है। मानों जूते पवित्र चीज थे मगर उसे बनाने वाले चमार अपवित्र थे।" २१

शांतिकुमार नामक युवक अछूतों के मंदिर प्रवेश के लिए आंदोलन करता है। लाठियाँ-गोलियाँ चलती हैं। अंत में चमारों को मंदिर प्रवेश का अधिकार प्राप्त होता हैं। एक बड़ा भारी समारोह होता है। आर्यसमाज ने अनेक बार दलितों के मंदिर में प्रवेश के लिए आंदोलन किये। यह दृष्टान्त यथार्थ में किसी घटना का साक्षात् वर्णन प्रतीत होता है।

प्रेमचंद 'हंस' पत्रिका के मुख पृष्ठ पर १९३३ में डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर का चित्र यह कहकर छापते है कि, "आपने सतत उद्योग से अनेक परीक्षाएँ पास करके विद्वता प्राप्त की है और यह प्रमाणित कर दिया है कि अछूत कहलाने वाली जातियों को किन्हीं असाधारण उपकरणों से ईश्वर ने नहीं बनाया। इस समय आप विश्वविख्यात व्यक्तियों में हैं।" २२

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि मुंशी प्रेम चन्द जी अपने जीवन में महर्षि दयानन्द व आर्य समाज की विचारधारा से जुड़े रहे। उनकी सफलता का एक प्रमुख कारण उनका आर्य विचारधारा को अपनाना था। इसके माध्यम से उन्होंने आर्य विचारधारा का भूरिशः प्रचार-प्रसार किया। वह आर्य समाज के गौरव प्रो. राजेंद्र जिज्ञासु जी २३, डॉ. विवेक आर्य जी २४ और प्रो. प्रदीप जैन जी २५ ने इस विषय में पहल तो की है। किन्तु इस विषय में और अधिक शोधकार्य करने की महती आवश्यकता है।

प्रेमचंद जी के इन सन्दर्भों के उपरांत अब हम प्रेमचंद जी के परम मित्र और छायावादी कविता की प्रवर्तक महाकवि जयशंकर प्रसाद जी के सन्दर्भ में विचार प्रस्तुत करने का प्रयास करेंगे | यद्यपि जयशंकर प्रसाद जी, प्रेमचंद जी की तरह विधिवत रीति से आर्य समाज के सदस्य तो नहीं थे तथापि उनके साहित्य में आर्य संस्कृति, आर्य इतिहास और आर्य समाज के सिद्धांतों का ऐसा स्वरुप प्राप्त होता है कि कोई भी पाठक बड़ी आसानी से इन सिद्धांतों को रेखांकित कर सकता है ।

स्वयं महाकवि जयशंकर प्रसाद जी महर्षि दयानन्द सरस्वती जी और आर्य समाज के बारे में लिखते हैं - " महर्षि दयानन्द द्वारा प्रस्थापित आर्य समाज इन सभी संस्थाओं यथा ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज तथा रामकृष्ण मिशन से अग्रणी रहा क्योंकि इसके द्वारा सैद्धान्तिक उपदेशों के स्थान पर रचनात्मक कार्यों को व्यवहार में लाया गया। भारतीय संस्कृति का प्रचार, बाल विवाह निषेध, विधवा विवाह का समर्थन और गुरूकुलों की स्थापना, आर्य समाज के प्रमुख कार्य हैं। स्त्री-शिक्षा के लिए आर्य कन्या पाठशालाओं की स्थापना का सर्वोत्तम प्रबंध है। स्वामी दयानन्द ने युगनिर्माता की भाँति देश के सुप्त मस्तिष्क को प्रबुद्ध करने का प्रयत्न किया । उनका ' सत्यार्थ प्रकाश ' इस दिशा में निजी महत्व रखता है।" २६

यह सभी रसिक पाठक जानते ही हैं कि प्रेमचंद और जयशंकर प्रसाद में कुछ मतभेद अवश्य थे, विशेषकर पुराने गड़े

मूर्दों को उखाड़ने की बात को लेकर किन्तु प्रेमचंद जी ने जयशंकर प्रसाद जी की उपन्यास **'कंकाल'** की भूरी-भूरी प्रशंसा की थी। इस प्रशंसा का कारण ही यह था कि इसमें आर्य समाज के विचारों का प्रभाव दिखाई देता है –

आर्य समाज का शिक्षा क्षेत्र में योगदान :-

आर्य समाज का स्पष्ट उल्लेख करते हुए कंकाल उपन्यास के पहले ही प्रकरण में निरंजन, विजय और मंगल के वार्तालाप में आर्य समाज की विशेषता के बारे में पता चलता है |

" इसी समय एक ब्रह्मचारी ने भीतर आकर सबको प्रणाम किया | विजय चकित हो गया और निरंजन प्रसन्न ।

'क्या उन ब्रह्मचारियों के साथ तुम्हीं घूमते हो मंगल ?' विजय ने आश्चर्य भरी प्रसन्नता से पूछा ।

'हाँ, विजय बाबू ! मैंने यहाँ एक ऋषिकुल खोल रखा है। यह सुनकर आप लोग यहाँ आये हैं, मैं कुछ भिक्षा लेने आया हूँ।'

'मंगल मैंने तो समझा था कि तुमने कहीं अध्यापन का काम आरम्भ किया होगा; पर तुमने तो यह अच्छा ढोंग निकाला।'

'वही तो करता हूँ विजय बाबू ! पढ़ाता ही तो हूँ। कुछ करने की तो प्रवृत्ति थी ही , वह भी समाज सेवा और सुधार परन्तु उन्हें क्रियात्मक रूप देने के लिए मेरे पास और कौन साधन था ?'

'ऐसे काम तो आर्य समाज करती ही थी, फिर उसकी जोड़ में अभिनय करने की क्या आवश्यकता थी ? उसी में सम्मिलित हो जाते।'

'आर्य समाज कुछ खंडनात्मक है और मैं प्राचीन धर्म की सीमा के भीतर ही सुधार का पक्षपाती हूँ ।' २७

इस वार्तालाप से सिद्ध होता है कि आर्य समाज ने शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व कार्य किया था। भले ही मंडन के स्थान पर खंडन करने की आर्य समाजी प्रवृत्ति पर व्यंग्य क्यों न किया हो !

आर्य समाज के विरोधी का आर्य समाजी बन जाना :-

आगे चलकर यही मंगल अपने गुरु गोस्वामी कृष्णचरण से कहता है कि – "मैं आर्य समाज का विरोध करता था, मेरी धारणा थी कि धार्मिक समाज में कुछ भीतरी सुधार कर देने से काम चल जाएगा, किन्तु गुरुदेव ! आपका शिष्य मंगल आप ही की शिक्षा से आज यह कहने का साहस करता है कि परिवर्तन आवश्यक है, एक दिन मैंने अपने मित्र विजय का इन्हीं विचारों के लिए विरोध किया था, पर नहीं अब मेरी यह दृढ धारणा हो गयी है कि इस जर्जर धार्मिक में जो पवित्र हैं, वे पवित्र बने रहें, मैं उन पतितों की सेवा करूँ, जिन्हें ठोकरें लग रहीं हैं, जो बिलबिला रहे हैं | " २८

आर्य समाज के विचारों का भारत संघ :-

तदुपरांत यही मंगल भारत संघ की स्थापना करता है और आर्य समाज के विचारों का प्रचार कराने वाले पत्रकों को छाप-छाप कर बंटवाता फिरता है, जिसमें लिखा होता है कि

" भारत संघ

हिन्दू धर्म का सर्व साधारण के लिए

खुला हुआ द्वार

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्यों से

(जो किसी विशेष कुल में जन्म लेने के

कारण संसार में सबसे अलग रहकर,

निस्सार महत्ता में फँसे हैं।)

भिन्न एक नवीन हिन्दू जाति का

संगठन कराने वाला सुदृढ़ केंद्र

जिसका आदर्श प्राचीन है –

राम, कृष्ण, बुद्ध की आर्य संस्कृति

का प्रचारक-वही -भारत संघ

सबको आमंत्रित करता है। " २९

शूद्रों की स्थिति और मूर्ति पूजा की निस्सारता :-

हिन्दू धर्म में शूद्रों की स्थिति को प्रतिपादित करते हुए और मूर्तिपूजा की निस्सारता स्पष्ट करते हुए भारत संघ के प्रचारक कहते हैं - "क्यों, क्या हिन्दू होना परम सौभाग्य की बात है। जब उस समाज का अधिकांश पददलित और दुर्दशाग्रस्त है, जब उसके अभिमान और गौरव की वस्तु धरापृष्ठ पर नहीं बची - उसकी संस्कृति विडंबना, उसकी संस्था सारहीन, और राष्ट्र बौद्धों के शून्य के सदृश बन गया है; जब संसार की अन्य जातियाँ सार्वजनिक भ्रातृभाव और साम्यवाद को लेकर खड़ी हैं तब आपके इन खिलौनों (मूर्तियों) से भला उनकी संतुष्टि होगी ?" ३०

जाति व्यवस्था का विरोध :-

वैदिक वर्ण व्यवस्था की विकृत रूप जाति व्यवस्था के कारण फ़ैली सामाजिक विषमता की विभीषिका का वर्णन कुछ इस प्रकार से किया है - "भारतवर्ष आज वर्णों और जातियों के बंधन में जकड़ कर कष्ट पा रहा है और दूसरों को कष्ट दे रहा है। यद्यपि अन्य देशों में भी इस प्रकार के समूह बन गये हैं; परन्तु यहाँ इसका भीषण रूप है। यह महत्त्व का संस्कार अधिक दिनों तक प्रभुत्त्व भोग कर खोखला हो गया है। दूसरों की उन्नति से उसे डाह होने लगा है। समाज अपना महत्त्व धारण करने की क्षमता खो चुका है परंतु व्यक्तियों की उन्नति का दल बनाकर सामूहिक रूप से विरोध करने लगा है प्रत्येक व्यक्ति अपनी झूठी महत्ता पर इतराता हुआ दूसरे को नीचा अपने से छोटा समझता है जिससे सामाजिक विषमता प्रभाव फैल रहा है।" ३१

दलितों और स्त्रियों का पक्ष :-

केवल दलितों ही नहीं स्त्रियों की दुर्दशा पर दृष्टि पात करते हुए जयशंकर प्रसाद 'कंकाल' में ही लिखते हैं- " भगवान की भूमि भारत में स्त्रियों पर तथा मनुष्यों को पतित बनाकर बड़ा अन्याय हो रहा है। करोड़ों मनुष्य जंगलों में अभी पशु जीवन बिता रहे हैं। स्त्रियाँ विपथ पर जाने के लिए बाध्य की जाती हैं, तुमको उनका पक्ष लेना पड़ेगा। उठो !" ३२

अन्य मतावलंबियों को हिन्दू धर्म में लाना :-

जयशंकर प्रसाद जी अपने दुसरे उपन्यास 'तितली' में 'तितली' उपन्यास में ही हिन्दू ज्ञान परम्परा का अध्ययन कर उसके शाश्वत जीवन मूल्यों से प्रभावित होकर शैली नामक ईसाई महिला अपने धर्म का त्यागकर हिन्दू धर्म को अपनाती भी है | जो मूलत: आर्य समाज के शुद्धि आंदोलन से प्रभावित है।

हिन्दुओं की विडम्बना :-

हिन्दुओं के नैतिक पतन पर कोड़े बरसाते हुए प्रसाद जी लिखते हैं - "हिन्दुओं में पारस्परिक तनिक भी सहानुभूति नहीं। मैं जल उठा। मनुष्य, मनुष्य के दुःख - सुख से सौदा करने लगता है और उसका मापदंड बन जाता है रुपया। आप देखते

नहीं कि हिन्दू की छोटी-सी गृहस्थी में कूड़ा करकट तक जुटा रखने की चाल है, और उन पर प्राण से बढ़ कर मोह। दस-पाँच गहने, दो-चार बर्तन, उनको बीसों बार बन्धक करना और घर में कलह करना, यही यही हिन्दू घरों में आये दिन के दृश्य हैं। जीवन का कैसे कोई लक्ष्य नहीं ! पद दलित रहते-रहते उनकी सामूहिक चेतना जैसे नष्ट हो गयी है।" ३३

सम्मिलित कुटुम्ब व्यवस्था का पक्ष :-

'तितली' उपन्यास में आगे जयशंकर प्रसाद जी हिन्दुओं की सम्मिलित कुटुम्ब या पारिवारिक व्यवस्था की दुरावस्था स्पष्ट करते हुए लिखते हैं - "मुझे धीरे-धीरे विश्वास हो चला है कि भारतीय सम्मिलित कुटुम्ब की योजना की कड़ियाँ चूर-चूर हो रही हैं। वह आर्थिक संगठन अब नहीं रहा, जिसमें कुल का एक प्रमुख सबके मस्तिष्क का संचालन करता हुआ रुचि की समता का भार ठीक रखता था। मैंने जो अध्ययन किया है, उसके बल पर इतना तो कहा जा सकता है कि हिन्दू समाज की बहुत-सी दुर्बलताएँ इस खिचरी कानून के कारण अपने को प्रतिकूल परिस्थति में देखता है। इसलिए सम्मिलित कुटुम्ब का जीवन दुःखदायी हो रहा है।" ३४

आर्यत्व के लोप पर निराशा :-

जयशंकर प्रसाद जी का अधूरे उपन्यास 'इरावती' में भी आर्यत्व के खो जाने के समस्या का वर्णन किया है – "सर्व साधारण आर्यों में अहिंसा, अनात्म और अनित्यता के नाम पर जो कायरता, विश्वास का अभाव और निराशा का प्रचार हो रहा है उसके स्थान पर उत्साह, साहस और आत्मविश्वास की प्रतिष्ठा करनी होगी। "हम सच ही निर्वीर्य हो रहे हैं।" हाँ ! मैं इसलिए प्रयत्न करूँगा कि इनकी वाणी शुद्ध, आत्मा निर्मल और शरीर स्वस्थ हो । ३५

क्लीव पति से विवाह मोक्ष एवं पुनर्विवाह का स्त्री को अधिकार :-

जयशंकर प्रसाद जी के नाटकों पर भी आर्य समाज का प्रभाव देखा जा सकता है। आर्य समाज की सबसे बड़ी विशेषता है कि इसमें वेद एवं वेदानुमोदित आर्ष ग्रंथों को ही महत्त्व दिया जाता है। अनार्ष ग्रंथों के मंतव्यों को त्यागकर सदियों से चली आ रही कुप्रथाओं की समीक्षा कर उनमें सुधार लाने हेतु जो अतुल्य कार्य महर्षि दयानन्द सरस्वती जी और उनके आर्य समाजी अनुयायियों ने किया है वह अद्वितीय सामजिक कार्य है। जयशंकर प्रसाद जी ने अपने अंतिम नाटक ' ध्रुवस्वामिनी ' में एक स्त्री के द्वारा क्लीव पति को त्यागकर अन्य पुरुष के साथ पुनर्लग्न या पुनर्विवाह के अधिकार की पैरवी की गयी है। रामगुप्त जो अपनी पत्नी ध्रुवदेवी को अपने प्राणों के रक्षार्थ शक्राज की अंकशायिनी बन्ने के लिए भेजता है, उसे मारकर उसी का अनुज चन्द्रगुप्त ध्रुवदेवी से पुनर्विवाह कर लेता है, वह भी कुल पुरोहित द्वारा पराशर स्मृति, नारद स्मृति और कौटिल्य अर्थशास्त्र के प्रमाणों से विवाह मोक्ष (तलाक) और पुनर्विवाह (पुनर्लग्न) का अधिकार दिया जाता है।

पुरोहित कहते हैं- " विवाह की विधि ने देवी ध्रुवस्वामिनी और रामगुप्त को एक भ्रांतिपूर्ण बंधन में बाँध दिया है। धर्म का उद्देश्य इस तरह पद दलित नहीं किया जा सकता। माता और पिता के प्रमाण से धर्म विवाह केवल परस्पर द्वेष से टूट नहीं सकते परन्तु यह सम्बन्ध उन प्रमाणों से भी विहीन है। और भी (रामगुप्त को देखकर) यह रामगुप्त मृत और प्रव्रजित तो नहीं, पर गौरव से नष्ट, आचरण से पतित और कर्मों से राजकिल्विषी क्लीव है। ऐसी अवस्था में रामगुप्त का ध्रुवस्वमिनी पर कोई अधिकार नहीं। " ३६

निष्कर्ष के रूप में कहा जाये तो महर्षि दयानन्द सरस्वती जी और आर्य समाज की विचारधारा का प्रभाव उपन्यास सम्राट प्रेमचंद जी पर अंत:साक्ष्य और बाह्य साक्ष्य के रूप में दिखाई देता है। साथ महाकवि जयशंकर प्रसाद जी पर केवल अंत:साक्ष्य के रूप में दिखाई देता है।

।।ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

सन्दर्भ सूची -

१.७ मार्च १९१३ में मुंशी दया नारायण निगम के नाम पत्र

२.चाँद पत्रिका, अछूत अंक, सं. नंदकिशोर तिवारी, मई १९२७

३.'आपका चित्र', 'आपकी तस्वीर' का हिंदी अनुवाद, अनुवादक प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु, २००३, दिल्ली

४.'आपका चित्र', 'आपकी तस्वीर' का हिंदी अनुवाद, अनुवादक प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु, २००३, दिल्ली

५.'आपका चित्र', 'आपकी तस्वीर' का हिंदी अनुवाद, अनुवादक प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु, २००३, दिल्ली

६.इंशा, उर्दू मासिक, मई-जून २००८, कलकत्ता

७.'गुरुकुल कांगड़ी में तीन दिन'(हिन्दी) – प्रेमचंद, मासिक पत्रिका 'माधुरी' के अप्रैल १९२८, लखनौ

८.'गुरुकुल कांगड़ी में तीन दिन'(उर्दू) – प्रेमचंद, उर्दू साप्ताहिक 'प्रकाश' सं. महाशय कृष्ण जी २२ अप्रैल १९२८, लाहौर

९.'पद्मसिंह शर्मा के साथ तीन दिन'- प्रेमचंद, 'विशाल भारत' सं. पं. बनारसीदास चतुर्वेदी, अगस्त १९३२, कलकत्ता

१०.'स्वामी श्रद्धानन्द और भारतीय शिक्षा प्रणाली' – प्रेमचंद, 'शुद्धि समाचार' का जनवरी-फरवरी १९३२ का संयुक्तांक, श्रद्धानन्द बलिदान अंक

११.वरदान - प्रेमचंद, हिंदीकोश 30 Nov. 2020 http://hindikosh.in

१२.मंदिर – प्रेमचंद, http://premchand.co.in/story/mandir

१३.प्रतिज्ञा – प्रेमचंद, सरस्वती प्रेस, बनारस कैंट, इंदौर (संस्करण १९३९)

१४.वरदान – प्रेमचंद, हिंदीकोश 30 Nov. 2020 http://hindikosh.in

१५.सफेद खून- प्रेमचंद

https://hindikahani.hindi-kavita.com/KhoonSafedMunshiPremchand.php

१६.' मलकाना राजपूत मुसलमानों की शुद्धि' – प्रेमचंद, ज़माना (उर्दू मासिक) – सं. दयानारायण निगम, मई १९२३, कानपुर

१७.कायाकल्प – प्रेमचंद , हिंदीकोश 30 Nov. 2020 http://hindikosh.in

१८.वरदान – प्रेमचंद, 30 Nov. 2020 http://hindikosh.in

१९.कर्मभूमि – प्रेमचंद, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, १९३२

२०.कर्मभूमि – प्रेमचंद, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, १९३२

२१.मंदिर - प्रेमचंद, http://premchand.co.in/story/mandir

२२.'हंस' पत्रिका का मुख पृष्ठ १९३३

२३.मुंशी प्रेमचंद, ऋषि दयानंद और आर्यसमाज – प्रो. राजेंद्र जिज्ञासु

२४.मुंशी प्रेमचंद और आर्य समाज – डॉ. विवेक आर्य

http://vedictruth.blogspot.com/2018/07/blog-post_3.html?m=1

२५.प्रेमचंद और आर्य समाज –प्रदीप जैन, प्रेमचंद की शेष रचनाएँ परिशिष्ट ३, हिंदी समय
२६.हिंदी साहित्यकारों के दृष्टि में महर्षि दयानन्द सरस्वती - भवानीलाल भारतीय
२७.कंकाल (द्वितीय खंड) – जयशंकर प्रसाद, हिंदी समय
२८.कंकाल (द्वितीय खंड) – जयशंकर प्रसाद, हिंदी समय
२९.कंकाल (द्वितीय खंड)– जयशंकर प्रसाद, हिंदी समय
३०.कंकाल – जयशंकर प्रसाद, पृ. ५६
३१.कंकाल – जयशंकर प्रसाद, पृ. २०२
३२.कंकाल– जयशंकर प्रसाद, पृ. १११
३३.तितली – जयशंकर प्रसाद, पृ. ४७
३४.तितली – जयशंकर प्रसाद, ८७
३५.इरावती – जयशंकर प्रसाद, पृ. ३१
३६.ध्रुवस्वामिनी (तृतीय अंक) – जयशंकर प्रसाद. हिंदी समय

महाकवि जयशंकर प्रसाद

साहित्य संस्कृति महोत्सव

राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं नाट्योत्सव 2024

प्रधान संपादक :- डॉ. कविता प्रसाद

संपादक :- डॉ. विजय पाटील

महाकवि जयशंकर प्रसाद

साहित्य संस्कृति महोत्सव

राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं नाट्योत्सव 2024

amazon Flipkart NEELAM PUBLICATION

Price : 500/-

978-93-48519-79-5

9 789348 519795